फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 273 1/– मार्च 2011

बदल सकते हैं यह सब हम

आज विचार और व्यवहार में, कथनी और करनी में बहुत ज्यादा फर्क आ गया है। सामान्य तौर पर "मैं सच कह रही हूँ – मैं झूठ नहीं बोल रहा" कहने की अपमानजनक स्थिति में हम अपने को अधिकाधिक पाते हैं। हालात ऐसे बने हैं कि आज प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन सौ बार मरती-मरता है।

स्थितियाँ काफी समय से खराब हैं। वक्त के साथ यह बद से बदतर होती आई हैं। हमारे पूर्वजों ने पृथ्वी के हर क्षेत्र में हालात बदलने के बहुत प्रयास किये हैं। हमारे समय में यह कोशिशें और व्यापक तथा तेज हो गई हैं। ट्युनिशिया, मिश्र, अल्जीरिया, यमन, बहरीन, लीबिया नवीनतम क्षेत्र हैं जहाँ आबादी का बड़ा हिस्सा जान की बाजी लगा कर हालात को बदलने के लिये आगे आया है।

परिणाम, हाँ परिणाम निर्णायक होते हैं। हमारे पूर्वजों ने जिन्हें समस्याओं का समाधान समझा वे आमतौर पर अधिक विनाशकारी समस्यायें साबित हुई हैं। इन्हें जानना, इन पर मनन करना जरूरी है। इन्हें नहीं दोहराना...

हम ऐसे दौर में हैं जहाँ एक शब्द के कई अर्थ हैं, परस्पर विरोधी अर्थ भी हैं। एक अनुभव के कई सबक, परस्पर विरोधी सबक हमारे सामने तने खड़े हैं। अनुभवों की भरमार सहायक है पर अनुभवों के अर्थ-सबक सिरदर्द हैं......

सूचनाओं की, ज्ञान की, विज्ञान की बाढ किसी को भी, कभी भी भ्रमित कर सकती है। सत्य और असत्य का, हित और अहित का घालमेल हो गया है। विश्व-भर में लोगों के बीच बहुत व्यापक आदान-प्रदानों के बिना इन सब से पार नहीं पाया जा सकता।

• हर किसी का हर समय वास्तविकता के किसी न किसी पहलू से वास्ता पड़ता है। हकीकत का न तो प्राकृतिक हिस्सा और न ही सामाजिक भाग स्थिर है। वास्तविकता हर समय बदलती रहती है।

• वास्तविकता जटिल है। हमारे द्वारा अपनी समस्याओं को प्रकृति के दायरे में देखना हमें प्रकृति पर विजय के अभियानों में ले जाता है। कुदरत को फतह करने की कोशिशों के विनाशकारी परिणामों को अब कोई भी अनदेखा नहीं कर सकती-सकता।

• वास्तविकता के सामाजिक हिस्से में समस्याओं की अनदेखी नहीं हुई है। विश्व के कोने-कोने में सामाजिक हलचलें हुई हैं, उथल-पुथल हुई है। लेकिन, सामाजिक धरातल पर परिवर्तन के प्रयास स्थानीय, क्षेत्रीय दायरों में आरम्भ हो कर आमतौर पर इन दायरों में सिमट जाते रहे हैं।

• वास्तविकता का सामाजिक भाग विश्व-भर में पसरता आया है। इधर सम्पूर्ण संसार को लपेटे में ले कर यह अधिकाधिक गुँथता हुआ घनिष्ठ हो कर एक जैसा-सा हो गया है। हमारी समस्यायें, हमारी सामाजिक समस्यायें विश्व संकट के रूप में इधर सौ-सवा सौ वर्ष से हमारे सामने हैं।

इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुये और जो है उसको बदलने के लिये, हमारे विचार से, कुछ महत्वपूर्ण बात यह हैं :

–कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण नहीं है और न ही कोई व्यक्ति शून्य है। व्यक्ति का वास्तविकता के जिस पहलू से वास्ता रहता है उसके बारे में उस व्यक्ति से ज्यादा कोई नहीं जानता-जानती। ऐसे में कोई धाराप्रवाह बोलती है और कोई काब्बा है, हकलाता है की बात गौण है। कोई किसी बोली-भाषा का प्रयोग करती है तो कोई अन्य किसी का इस्तेमाल करता है यह गौण है। स्त्री होना अथवा पुरुष होना का इस सन्दर्भ में महत्व नहीं है। रंग, आयु, क्षेत्र की भिन्नतायें तथा पढे और अनपढ के भेद गौण हैं। जटिल वास्तविकता, गतिशील वास्तविकता की मोटा-मोटी समझ के लिये विश्व के पाँच-छह अरब लोगों के बीच आदान-प्रदान बढाने आवश्यक हैं।

–बदलने के लिये समझना है। यह समझ पाँच-छह अरब लोगों की सक्रिय साझेदारी पर निर्भर है। इसके लिये एक नई भाषा की जरूरत है, उस भाषा की आवश्यकता है जो प्रत्येक व्यक्ति को महत्व देती हो। इस सन्दर्भ में अधिकतर लोगों के महत्व को नकारने वाली जापानी-चीनी-अरबी-हिन्दी-जर्मन-अंग्रेजी भाषाओं का मात्र तकनीकी उपयोग बचता है।

–समस्यायें आज हिमालयी आकार ग्रहण कर चुकी हैं। जब यह काफी छोटी थी तब भी किसी एक के काबू में नहीं आई। और हाँ, हर व्यक्ति बहुत आसानी से कंकड़ उठा सकती-सकता है। पाँच-छह अरब लोगों द्वारा कंकड़ उठाना पीड़ा के हिमालय का आसानी से नामो-निशान मिटा सकता है।

–उत्पादन और वितरण ने जबरन आज पृथ्वी के सब निवासियों को जोड़ दिया है। जबरन जोड़ना अनेक समस्यायें उत्पन्न करता है पर यह सब मनुष्यों के बीच आदान-प्रदान का आधार भी प्रदान कर रहा है। बाधायें लाँघने के लिये धैर्य की, बहुत धीरज की आवश्यकता है..... कार्यस्थल पर, निवासस्थल पर मजबूरी वाले सम्बन्धों को नये रिश्तों में बदलना कठिन नहीं है। शिफ्ट-विभाग-फैक्ट्री-औद्योगिक क्षेत्र-सरकारी सीमाओं के अन्दर और बाहर सम्बन्धों के नये ताने-बाने आज सम्पूर्ण पृथ्वी को आसानी से अपने में समेट सकते हैं। इस पैमाने पर अनुभवों तथा विचारों का आदान-प्रदान सामाजिक मन्थन से ऐसे परिणामों की अच्छी सम्भावनायें लिये है जो समस्याओं के ऐसे समाधान प्रदान करेंगे कि मनुष्यों की पीड़ा का अन्त हो, मानवों के प्रकृति के संग सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण बनें।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

**अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। * सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।*

महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

फरीदाबाद में मजदूर

लखानी इण्डिया मजदूर : "प्लॉट 122 सैक्टर-24 स्थित सैण्डल फैक्ट्री में 150 कैजुअल वरकरों ने 16 फरवरी को काम बन्द किया तब उन्हें जनवरी की तनखा दी। एक सौ स्थाई मजदूरों को जनवरी की तनखा आज 17 फरवरी तक नहीं दी है। कम्पनी हर रोज जबरन 4 घण्टे ओवर टाइम पर रोकती है, भुगतान दुगुनी की बजाय डेढ की दर से।"

सुपर एज श्रमिक : "प्लॉट 109 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में जनवरी की तनखा 12 फरवरी तक नहीं दी तो मजदूर छोड़ कर जाने लगे। आश्वासन दे कर रोके और 13 फरवरी को तनखा दी। फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8½-9 तक रोज काम, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ **यामाहा** मोटरसाइकिल आदि के पुर्जे बनते हैं।"

एस्को डाइकास्टिंग कामगार : "प्लॉट 37 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **फिलिप्स** की हैलोजन लाइटिंग असेम्बल करते हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा बढाने, ओवर टाइम का भुगतान कानून अनुसार दुगुनी दर से, ठेकेदार के जरिये रखे 65 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन तथा ई.एस. आई. व पी.एफ. प्रावधान लागू करने की माँगें उठने पर कम्पनी ने 35 में से एक स्थाई मजदूर को निलम्बित कर दिया है। डाइकास्टिंग का कार्य कम्पनी की सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में होता है और सैक्टर-58 में कम्पनी की तीसरी फैक्ट्री बन गई है।"

मैटल कोटिंग वरकर : "प्लॉट 96, 97 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 350 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

माइक्रो मशीन्स मजदूर : "प्लॉट 103 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। हैल्परों की तनखा 3800 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एलके टेलीलिन्क्स श्रमिक : "सैक्टर-25 के प्लॉट 84 के सामने स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर कागजों में 8-8 घण्टे की शिफ्ट दर्शाते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। रोज 12 घण्टे काम पर 30 दिन के 55 मजदूरों को 3500-4000 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। मजदूरों की शिकायत पर श्रम विभाग के अधिकारी कम्पनी को सूचना दे कर जाँच के लिये फैक्ट्री गये — 55 मजदूरों को फैक्ट्री से घर भेज दिया और ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले 15 मजदूर ही फैक्ट्री में रखे थे तब। यहाँ **इंडियन टेलीफोन इन्डस्ट्रीज,** मानकपुर का माल बनता है।"

इको ऑटो कामगार : "प्लॉट 20 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 9¼ घण्टे की शिफ्ट है और शनिवार तथा रविवार की छुट्टी। कम्पनी ने महीने के लिये 23 कार्य दिवस निर्धारित किये हैं। जिस महीने में 23 कार्य दिवस नहीं होते उस माह की तनखा से 350 रुपये काट लेते हैं।"

सुरक्षा कर्मी : "बल्लभगढ स्टेशन के पास नेहरु कॉलोनी में कार्यालय वाली **नेशनल इन्डस्ट्रीयल सेक्युरिटी सर्विस** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। रोज 12 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के 4500 रुपये। ई.एस.आई. व पी. एफ. के 450 रुपये काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे गार्ड को नहीं मिलते। जनवरी की तनखा आज 17 फरवरी तक नहीं दी है।"

लखानी फैशन वरकर : प्लॉट 136 सी सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में तनखा से ई.एस.आई. के 74 रुपये तथा पी.एफ. के 499 रुपये काटते हैं और पे-स्लिप देते हैं पर पे-स्लिप में पी.एफ. नम्बर के सामने खाली स्थान, ई.एस.आई. नम्बर के सामने भी खाली स्थान। जनवरी की तनखा के लिये 16 फरवरी को खुला विरोध हुआ तब 500 मजदूरों में से कुछ को तनखा दी।"

सुपर इलेक्ट्रो मजदूर : "प्लॉट 3 ए सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 10 घण्टे कार्य पर 30 दिन के हैल्परों को 4349 रुपये देते हैं।"

मॉडर्न इंजिनियरिंग श्रमिक : "प्लॉट 56 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 और कारीगरों की 4000-4500 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

सुपर फैशन कामगार : "प्लॉट 262 ए-बी सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। लेकिन...... पे-स्लिप में माह में 15 दिन 2-2 घण्टे ओवर टाइम और भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं। सुबह 9 बजे आरम्भ शिफ्ट रात 9 बजे समाप्त होती है पर मैनेजमेन्ट 7 बजे कार्ड पंच कर देती है। पे-स्लिप में ओवर टाइम के जो पैसे होते हैं उन्हें वास्तव में दिये जाते ओवर टाइम के पैसों से काट लेते हैं। मजदूरों द्वारा एतराज करने पर मैनेजर और मास्टर पुलिस बुला कर चौकी ले जाकर धमकाते हैं। सुपर फैशन कम्पनी की दूसरी फैक्ट्री 12/4 मथुरा रोड पर है।"

खन्ना इन्टरप्राइज वरकर : "प्लॉट 123 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2800-3800 रुपये। शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

मौर्या उद्योग मजदूर : "सोहना रोड पर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 4348 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 1500 मजदूरों में 12-15 की ही हैं। प्रदूषण बहुत ज्यादा है। बहुत गाली देते हैं, मारपीट भी।"

अल्ट्रा वायरिंग वरकर: "सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, महीने के तीसों दिन। छुट्टी देते ही नहीं। छुट्टी करने पर नौकरी से निकाल देते हैं। वर्ष के 365 दिन में फैक्ट्री 5 दिन ही बन्द रहती है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3000-4000 रुपये और काम करते 6 महीने हो जाते हैं तब ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू करते हैं। यहाँ **मिण्डा** तथा **दीपक ऑटो** के लिये वाहनों में लगते कनेक्टर बनते हैं।"

आई एम टी (पेज तीन का शेष)

जरिये रखे लगभग 800 मजदूर हैं। वी क्यू एम सी में तीन छोटी कनवेयर भी हैं — एक शिफ्ट में एक कनवेयर पर 5 स्थाई (2एग्जेक्युटिव, 3 लाइन लीडर), 2 कम्पनी कैजुअल, ठेकेदारों के जरिये रखे 40 मजदूर रहते हैं। पूरी फैक्ट्री में अधिकतर कार्यस्थलों पर स्थाई का कार्य मुख्यतः काम करवाना है। स्कूटर प्लान्ट हो चाहे बाइक प्लान्ट, उत्पादन का काम आमतौर पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर करते हैं। इधर इंजिनियरिंग की डिग्री वालों को ही साढे तीन लाख रुपये वार्षिक में स्थाई कर रहे हैं। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की बेसिक 4700, मकान भत्ता 1050, उत्पादन भत्ता 850 और इनके जोड़ में से 509 रुपये पी.एफ. के तथा 108 रुपये ई.एस. आई. के काट लेते हैं। पूरी फैक्ट्री में सीधे-सीधे उत्पादन में, हार्ड प्रोडक्शन में 1800 स्थाई और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 6500 मजदूर हैं। और फिर, अन्तिम जाँच के बाद बाइक-स्कूटर को पार्किंग अथवा लॉजिस्टिक में पहुँचाने के लिये चौथे ठेकेदार के जरिये रखे 400 मजदूर... .. सफाई के लिये पाँचवें ठेकेदार के जरिये रखे 400-500 वरकर...... तीन कैन्टीनों में छठे ठेकेदार के जरिये रखे 150-200 मजदूर..... सुरक्षा के लिये सातवें ठेकेदार के जरिये रखे 300 गार्ड..... . यातायात में कई ठेकेदारों के जरिये रखे 60 बसों के लिये 120 चालक-परिचालक, 50-60 कारों के लिये 50-60 ड्राइवर, हर रोज 6000 बाइक-स्कूटर को फैक्ट्री से ले जाने के लिये 100-200 ट्रकों पर 400 चालक-खलासी..... इधर बी-शिफ्ट मजदूरों के लिये हर सोमवार को रात 11½ से 1½ बजे तक ओवर टाइम कार्य अनिवार्य है। वैसे, रात 11½ से अगली सुबह 6½ तक वाली सी-शिफ्ट हर रोज होती है और इसमें 500-600 मजदूर ओवर टाइम पर होते हैं, ए व बी शिफ्टों में गाड़ियों पर छूट गये काम को करते हैं।"

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान	मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद–121001
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2011 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

गुड़गाँव में मजदूर

उद्योग विहार फेज-1 प्लॉट 100 में निर्माणाधीन बहुमंजिली इमारत का एक हिस्सा 17 फरवरी को सुबह अचानक गिर गया। बगल की सड़क जिससे रोज बहुत बड़ी सँख्या में मजदूर गुजरते हैं उस सड़क को पुलिस ने 22 फरवरी तक बन्द रखा। दो मरे... 15-20 मरे... 30-35 मरे... 60-65 मरे....

कॉनसेप्ट क्लोथिंग मजदूर : "प्लॉट 433 सैक्टर-37 स्थित फैक्ट्री में ओवर टाइम भुगतान दुगुनी दर से कह कर भर्ती किया और जनवरी में यह सिंगल रेट से कर दिया..... यह कह कर कि तनखा बढा देंगे। तनखा नहीं बढाई है। दिसम्बर माह की पे-स्लिप नहीं दी, बोले कि जनवरी में दे देंगे। सात जनवरी को भोजन अवकाश तक पे-स्लिप नहीं दी तो मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। काम बन्द हुये एक घण्टा हो गया तो साहब बोले कि काम शुरू करो, अभी देते हैं। तीन बजे जो पे-स्लिप बाँटी उसमें ओवर टाइम, ई.एस.आई., पी. एफ. का जिक्र ही नहीं...... मजदूर भड़के, मैनेजर की पिटाई। पुलिस आई.... कहा कि 12 जनवरी को पे-स्लिप व तनखा देंगे। मजदूरों ने कहा कि ओवर टाइम सिंगल रेट से करने से गुजारा और मुश्किल हो गया है इसलिये तनखा से ई.एस. आई. व पी.एफ. की राशि मत काटो.... बोले कि जनवरी से भर्ती वालों की नहीं काटेंगे। लेकिन, जनवरी की तनखा 12 फरवरी को दी तो ई.एस. आई. व पी.एफ. के पैसे काटे थे। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड के पैसे कुछ मजदूरों को मिलते हैं, कुछ को नहीं मिलते। छूटने के समय किसी ने 5 मिनट पहले कार्ड पंच कर दिया तो परसनल वाले आधे दिन की अनुपस्थिति लगा देते हैं। दो दिन छुट्टी करने पर कार्ड रोक कर नया कार्ड बनाते हैं – नई भर्ती दिखाना हेराफेरी का एक और जरिया बना है। नौकरी छोड़ने पर इस्तीफा लिखवा कर हफ्ता-पन्द्रह दिन किये काम के पैसों के लिगे महीने के आखिरी शनिवार को बुलाते हैं...... 26 फरवरी वाले शनिवार को ऐसे 40-50 मजदूर आये, रात 8 बजे 2-3 को पैसे दिये और बाकी को फिर आने को कहा। चक्कर कटवा कर कई मजदूरों के 5-10 दिन किये काम के पैसे खा जाते हैं। फैक्ट्री में भोजन करने के स्थान का प्रबन्ध नहीं है – सीढियों पर, कूड़े की बगल में खाना खाते हैं। मजदूरों के पीने का पानी खारा है।"

वाटिका इण्डिया नैक्स्ट श्रमिक : "राष्ट्रीय राजमार्ग सँख्या 8, रामपुरा के पास 24 स्थानों पर निर्माण के लिये वाटिका कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखे हैं। ईंट पकड़ाने, मसाला देने का कार्य 500 से ज्यादा महिला मजदूर कर रही है और इन्हें 8 घण्टे के 110-120-130 रुपये देते हैं।"

गौरव इन्टरनेशनल कामगार : "198 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों को जबरन सुबह 6-7 बजे बुला लेते हैं और रात 10 बजे छोड़ते हैं। काम के लिये भारी दबाव – महिला मजदूरों को मैनेजर बहुत गाली देता है, कहता है कि ओवर टाइम के दो घण्टे का भुगतान दुगुनी दर से किसलिये करते हैं...... ओवर टाइम के बाकी घण्टों के पैसे सिंगल रेट से। पुरुष मजदूरों की सुबह 9-9½ से रात 9¼-10¼ की ड्युटी रोज है और रात 12, अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं।"

ईस्टर्न मेडिकिट वरकर : "उद्योग विहार स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को जनवरी की तनखा 20 फरवरी को दी।"

ई ई एल मजदूर : "401-402 तथा 509-510 उद्योग विहार फेज-3 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 12 घण्टे की शिफ्ट में 40 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 500 वरकर सीमेन्ट फैक्ट्रियों की मशीनें बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूरों की तनखा 4000 रुपये। पी. एफ. राशि तनखा से काटते हैं पर 3-4 महीने में छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते।"

पर्ल ग्लोबल श्रमिक : "446 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में काम करते 1500-2000 मजदूरों में से अधिकतर को ठेकेदारों के जरिये रखा है। सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है और अगली सुबह 4 बजे तक रोक लेते हैं। साँय 6 से रात 8 के दो घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और उसके बाद के समय का सिंगल रेट से। काम कम होते ही निकाल देते हैं। गाली देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं। ई.एस.आई. कार्ड पुरानों को ही और 3-4 महीने में निकालने-छोड़ने पर फण्ड के पैसे मजदूरों को नहीं मिलते – झूठ कहते हैं कि तीन महीने का पी.एफ. नहीं मिलता।"

ऋचा एण्ड कम्पनी कामगार : "193 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हर शनिवार को सुबह 9 बजे काम आरम्भ करते हैं और रविवार को सुबह 6 बजे जा कर छोड़ते हैं। लगातार 21 घण्टे काम करवाते हैं पर रोटी के लिये पैसे नहीं देते। ओवर टाइम के 2 घण्टों के पैसे दुगुनी दर से तथा बाकी के घण्टों के सिंगल रेट से।"

आर के फुटवीयर कम्पोनेन्ट्स वरकर : "प्लॉट 529 तथा 549 सैक्टर-37 और 787 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्रियों में जूतों के सोल व हील बनाते 250 मजदूरों में 25 की ही ई. एस.आई. व पी.एफ. हैं। इन 25 की तनखा 7000-8000 रुपये और बाकी 225 मजदूरों की तनखा 3600-4000 रुपये। महीने में 100-125 घण्टे ओवर टाइम के, भुगतान सिंगल रेट से। गाली बहुत देते हैं, मारपीट भी।"

इण्डियन हैण्ड फैब मजदूर : "92 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500-4000 रुपये और सिलाई कारीगर पीस रेट पर। सुबह 9½ से रात 9 की ड्युटी रोज, रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, जनवरी की 24 फरवरी को दी। शौचालय बहुत गन्दे, सुपरवाइजर और 30-35 पुराने मजदूर फैक्ट्री के बाहर जाते हैं पर बाकी को मजबूरी में अन्दर ही जाना पड़ता है।"

एरिस फैशन श्रमिक : "234 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में स्टाफ ही स्थाई है, मजदूरों को निकालते रहते हैं। ई.एस.आई. व पी. एफ. सिर्फ स्टाफ की हैं, मजदूरों की नहीं हैं।"

आई एम टी मानेसर

वलाया मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर-4 स्थित **वलाया क्लोथिंग** तथा **वलाया डिजाइन** में महिला मजदूरों को भी जबरन पूरी रात रोक लेते हैं। सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है और रात 9, रात 12, अगली सुबह 4, सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ काम करते 200 मजदूरों में 50-60 की ही ई.एस. आई. व पी.एफ. हैं। इन 50-60 में भी दो-तीन वर्ष वालों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं और पी. एफ. की राशि तो 2009 से किसी मजदूर की जमा नहीं की है। तनखा बहुत कम – सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन ही देते हैं। तनखा बढाओ, ई.एस.आई. कार्ड दो, पी.एफ. जमा करो की माँग करते हुये मजदूरों ने 1 मार्च को पूरे दिन काम बन्द रखा.... आश्वासन दिये हैं।"

कुरुबॉक्स प्रोडक्ट्स श्रमिक : "प्लॉट 12 सैक्टर-5 आई एम टी स्थित फैक्ट्री में करीब 5000 मजदूर सुबह 9 बजे लगते हैं और रात 12, अगली सुबह 4 बजे तक **फोसिल, नैक्स्ट** आदि के लिये चमडे के थैले व बटुये बनाते हैं। महीने में 100-125 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान 33 रुपये प्रतिघण्टा – दुगुनी दर से कम। इधर जनवरी से 250 मजदूरों की ड्युटी सुबह 9 से रात 8 की कर दी है। इन्हें ओवर टाइम नहीं देते, 11 घण्टे का उत्पादन निर्धारित कर दिया है जिसे पूरा करने में चाहे 12 घण्टे लगें। इन 250 को 11-12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 6000-6500 रुपये। इन्हें जनवरी की तनखा 10 फरवरी को दे दी..... जबकि, 5000 मजदूरों को दिसम्बर की तनखा 12 फरवरी को जा कर दी, जनवरी की तनखा आज 25 फरवरी तक नहीं दी है और दिसम्बर में किये ओवर टाइम के पैसे भी आज 25 फरवरी तक नहीं दिये हैं। कम्पनी की प्लॉट 8-9 सैक्टर-7 आई एम टी स्थित फैक्ट्री में करीब 2000 मजदूर चमड़े की बैल्ट व पर्स बनाते हैं और 199 उद्योग विहार फेज-1 में अब सैम्पलिंग का कार्य ही होता है।"

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर वरकर: "प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री के बाइक प्लान्ट के व्हीकल क्वालिटी मोटर साइकिल (वी क्यू एम सी) विभाग में दो शिफ्टों में 900 लोग काम करते हैं। कनवेयर से बाइकें उतरते ही यहाँ उनके नुक्स ढूँढने, ब्रेक-स्पीडोमीटर-इंजन क्षमता जाँचने, सुधार करने के पश्चात अन्तिम जाँच के लिये भेजते हैं जहाँ से गाड़ियाँ बिकने के लिये जाती हैं। यहाँ 50-60 स्थाई, 20 कम्पनी कैजुअल और तीन ठेकेदारों के

(बाकी पेज दो पर)

दिल्ली में मजदूर

तुगलकाबाद में बहुत तंग स्थानों पर कपड़ों की सिलाई करने वाले काफी फैब्रिकेटर हैं जो निर्यात करने वाली फैक्ट्रियों-कम्पनियों का काम करते हैं। ऐसे एक फैब्रिकेटर के यहाँ 25 जनवरी को बॉयलर फटा. .....चौथी मंजिल पर गेट के पास आग लगी। फिनिशिंग विभाग के 30 मजदूर मरे – 16 की फैक्ट्री में ही मृत्यु हो गई थी और 14 ने अस्पताल में दम तोड़ा। जली अवस्था में मास्टर और उसका लड़का अस्पताल में। सिलाई कारीगर नीचे थे – बच गये।

स्ट्रेन इम्ब्राइड्री कलेक्शन मजदूर : "ए-254 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 50 मजदूरों की सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी है। इन धागे काटने-आल्टर करने-चैकर को 11½ घण्टे रोज काम पर 26 दिन के 3500 रुपये देते हैं। इम्ब्राइड्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। यहाँ हैल्परों को रोज 12 घण्टे पर 26 दिन के 4500 रुपये। कम्प्युटर इम्ब्राइड्री ऑपरेटरों में 200 को प्रतिदिन 12 घण्टे पर 26 दिन के 5000-5500 तथा 100 को 6000-6400 रुपये। रविवार के कार्य को ओवर टाइम कहते हैं पर इसका भी भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 400 मजदूरों में 30 के ही हैं। सुपरवाइजर गाली देते हैं। कुछ पुराने मजदूरों ने तनखा बढवाने के लिये दिसम्बर 2010 में एक यूनियन का सहारा लिया था – इस्तीफे लिखवा कर उन 25 को हिसाब में 35 से 70 हजार रुपये दिये और बाकी की तनखा में 500 रुपये बढाये थे।"

इलेक्ट्रो स्पार्क श्रमिक : "ए-122, 123, 126 ओखला फेज-2 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में टेलीफोन-टीवी टावर तैयार करते 400 मजदूरों की सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और बारी-बारी से हर रोज 45 वरकरों को तो लगातार 36 घण्टे काम पर रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। लगातार 36 घण्टे रोकते हैं तब 4 घण्टे सोने देते हैं। लोहे का काम है, चोटें लगती रहती हैं – ई.एस.आई. भेज देते हैं।"

किरण उद्योग कामगार : "बी-182 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी द्वारा स्वयं रखे 40 सी एन सी ऑपरेटरों की तनखा 6448 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। इनकी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट – रविवार को भी काम, दिन में 9 घण्टे तथा रात को 12 घण्टे। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 120 मजदूरों की तनखा 3000-3800 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं पर रविवार की छुट्टी। एक ठेकेदार के जरिये रखे 80 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और दूसरे ठेकेदार के जरिये रखे 40 की 12 घण्टे की एक शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सब मजदूरों को सिंगल रेट से। सब मजदूरों को 12 घण्टे के दौरान एक चाय व समोसा देते थे – दिसम्बर से ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को समोसा देना बन्द कर दिया है। काम का भारी दबाव – गाली देते हैं, चाय गटको और काम में लगो, पानी-पेशाब पर भी रोक। यहाँ **डेन्सो** आदि का काम होता है।"

रॉयल लेसेज वरकर : "डी-114 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 9 तक रोज काम, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते हैं पर रात 2 बजे तक रोकते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। सिलाई कारीगर 420 हैं और इनकी ई.एस. आई. तो है पर पी.एफ. नहीं है। तीस हैल्परों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा, प्रतिघण्टा का टारगेट। सिलाई कारीगर पानी-पेशाब के लिये उठने से भी बचते हैं, टारगेट पूरा नहीं होने पर भगा देते हैं। टारगेट के चक्कर में मजदूर बीमार बहुत होते हैं – शरीर पीला पड़ जाता है, पानी की कमी हो जाती है, उल्टी-दस्त अस्पताल पहुँचा देते हैं। यहाँ **एच एम** और **जेसिका** का माल बनता है।"

यूनिवर्सल शीट मैटल मजदूर : "सी-97 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 और कारीगरों की 4000-4500 रुपये। प्रतिदिन सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी और रात 1½ बजे, अगली सुबह 8½ तक रोक लेते हैं। सुबह 8½ बजे छूटने के आधे घण्टे बाद, 9 बजे से फिर काम। रविवार को सुबह 7 से दोपहर 3½ बजे की ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और हर महीने गड़बड़ी कर 200-250 रुपये खा भी जाते हैं। गाली देते हैं। पीने का पानी खारा। शौचालय गन्दा।"

● *1 फरवरी 2011 से* **दिल्ली सरकार** *द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल श्रमिक 6084 रुपये (8 घण्टे के 234 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 6734 रुपये (8 घण्टे के 259 रुपये); कुशल श्रमिक 7410 रुपये (8 घण्टे के 285 रुपये)* / स्टाफ में दसवीं से कम *6734 रुपये (8 घण्टे के 259 रुपये);* दसवीं पास पर स्नातक से कम *7410 रुपये (8 घण्टे के 285 रुपये);* स्नातक एवं अधिक : 8060 रुपये (8 घण्टे के 310 रुपये)। पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054

● पहली जनवरी 2011 से **हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4503 रुपये (8 घण्टे के 173 रुपये); अर्ध-कुशल अ 4633 रुपये (8 घण्टे के 178 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4763 रुपये (8 घण्टे के 183 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4893 रुपये (8 घण्टे के 188 रुपये); कुशल श्रमिक ब 5023 रुपये (8 घण्टे के 193 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5153 रुपये (8 घण्टे के 198 रुपये)* / इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ।

भविष्य निधि - पी.एफ.

प्लॉट 43 सैक्टर-44, गुड़गाँव स्थित भविष्य निधि संगठन का उप-क्षेत्रीय कार्यालय कैजुअल वरकरों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के लिये अतिरिक्त परेशानी पैदा करता है। नौकरी छोड़ने के बाद जो मजदूर पी.एफ. की अपनी राशि निकालने का फार्म जमा करवाते हैं उन्हें 6 महीने बाद तक पैसे नहीं मिलते। उद्योग विहार स्थित **गौरव इन्टरनेशनल** फैक्ट्री के मजदूरों द्वारा मई तथा जुलाई 2010 में जमा फार्मों पर 25 फरवरी 2011 तक मजदूरों को पैसे नहीं मिले थे। फार्म जमा करने के तीन महीने बाद पूछने पर भविष्य निधि कर्मचारी बोलते हैं कि 6 महीने बाद आना। आई एम टी मानेसर स्थित **होण्डा** मजदूरों द्वारा नवम्बर 2010 में जमा फार्मों पर आज 1 मार्च तक फण्ड के पैसे मजदूरों को नहीं मिले हैं।

भविष्य निधि संगठन के कुछ नियम: •पैसे निकालने का फार्म जमा करने के एक महीने के अन्दर-अन्दर मजदूर को पैसा दे देना। •एक-दो-चार महीने का फण्ड निकालने पर दुगुनी राशि मजदूर की बनती है क्योंकि ऐसे मजदूरों की पेन्शन नहीं होती। फण्ड निकालने वाले फार्म का लाल पन्ना भरवा कर फार्म जमा करना चाहिये। •भविष्य निधि अधिकारियों का काम है कम्पनियों से हर महीने पी.एफ. राशि जमा करवाना। •जहाँ 20 अथवा अधिक लोग काम करते हैं वहाँ पी.एफ. प्रावधान लागू करवाना भविष्य निधि अधिकारियों का काम है।

इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये दो पते : 1. केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त, 14 भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066 2. श्रम मन्त्री, भारत सरकार, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001

5–10–15 दिन के पैसे

नौकरी छोड़ने अथवा नौकरी से निकाले जाने पर मजदूरों के सम्मुख पाँच-दस दिन किये काम के पैसे प्राप्त करने की समस्या व्यापक है। श्रम विभाग में शिकायत पर मिलती तारीखें इस राह को बेकार बनाती हैं। वकील की फीस, गुण्डे को खर्चा की इन मामलों में गुँजाइश नहीं होती। बहुत छोटी होने के कारण किसी प्रभावशाली से सहायता की सम्भावना बहुत कम होती है। इसलिये अकेले चक्कर काटते हैं, जब-तब जान-पहचान वाले को साथ ले जाते हैं पर कई बार बात बनती नहीं। ऐसे में चक्कर काट कर इन पैसों को छोड़ देते हैं। कभी-कभी गुस्सा काबू में नहीं रहता और मारपीट की अतिरिक्त समस्या पैदा हो जाती है। इस छोटी, बहुत छोटी समस्या से पार पाने के लिये मिल कर कदम उठाना एक विकल्प लगता है। मजदूर समाचार तालमेल की बैठकों में इस बारे में मिलें : 1. सी एन 49 पहली मंजिल (गोपाल ज्वैलर्स के सामने) अल्ला मोहल्ला, तेखण्ड – ओखला, दिल्ली।

2 रविवार को प्लॉट नं. 108, पुराने सरकारी स्कूल की बगल में, मुजेसर (फरीदाबाद)।

3. देशराज (कालू) का मकान, तालाब के पास, रामपुरा, गुड़गाँव।

4. कमरा नं. 25, लक्खीराम का मकान, गली नम्बर–6, कापसहेड़ा, दिल्ली।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011